भगवान अरिष्टनेमि की ऐतिहासिकता

☐ श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री

भगवान अरिष्टनेमि बाईसवें तीर्थंकर हैं। आधुनिक इतिहासकारों ने जो कि साम्प्रदायिक संकीर्णता से मुक्त एवं शुद्ध ऐतिहासिक दृष्टि से सम्पन्न हैं, उनको ऐतिहासिक पुरुषों की पंक्ति में स्थान दिया है। किन्तु साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से इतिहास को भी अन्यथा रूप देने वाले लोग इस तथ्य को स्वीकार नहीं करना चाहते। मगर जब वे कर्मयोगी श्रीकृष्ण को ऐतिहासिक पुरुष मानते हैं तो अरिष्टनेमि भी उसी युग में हुए हैं और दोनों में अत्यन्त निकट के पारिवारिक सम्बन्ध थे, अर्थात् श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव और अरिष्टनेमि के पिता समुद्रविजय दोनों सहोदर भाई थे, अतः उन्हें ऐतिहासिक पुरुष मानने में संकोच नहीं होना चाहिए।

वैदिक साहित्य के आलोक में :

ऋग्वेद में 'अरिष्टनेमि' शब्द चार बार प्रयुक्त हुआ है।[१] 'स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः' (ऋग्वेद १।१४।८९।६) यहाँ पर अरिष्टनेमि शब्द भगवान् अरिष्टनेमि के लिए आया है। कितने ही विद्वानों की मान्यता है कि छान्दोग्योपनिषद् में भगवान अरिष्टनेमि का नाम 'घोर आंगिरस ऋषि' आया है। घोर आंगिरस ऋषि ने श्रीकृष्ण को आत्मयज्ञ की शिक्षा प्रदान की थी। उनकी दक्षिणा तपश्चर्या, दान, ऋजुभाव, अहिंसा, सत्यवचन रूप थी।[२] धर्मानन्द कौशाम्बी का मानना है कि आंगिरस भगवान् नेमिनाथ का ही नाम था।[3] घोर शब्द भी जैन श्रमणों के आचार और तपस्या की उग्रता बताने के लिए आगम साहित्य में अनेक स्थलों पर व्यवहृत हुआ है।[४]

छान्दोग्योपनिषद् में देवकीपुत्र श्रीकृष्ण को घोर आंगिरस ऋषि उपदेश देते हुए कहते हैं—अरे कृष्ण ! जब मानव का अन्त समय सन्निकट आये तब उसे तीन वाक्यों का स्मरण करना चाहिए—

(१) त्वं अक्षतमसि—तू अविनश्वर है।
(२) त्वं अच्युतमसि—तू एक रस में रहने वाला है।
(३) त्वं प्राणसंशितमसि—तू प्राणियों का जीवनदाता है।[५]

---

१ (क) ऋग्वेद १।१४।८९।६ (ख) ऋग्वेद १।२४।१८०।१०
(ग) ऋग्वेद ३।४।५३।१७ (घ) ऋग्वेद १०।१२।१७८।१

२ अतः यत् तपोदानमार्जवमहिंसासत्यवचनमितिता अस्य दक्षिणा।
—छान्दोग्य उपनिषद् ३।१७।४

३ भारतीय संस्कृति और अहिंसा, पृ० ५७

४ घोरतवे, घोरे, घोरगुणे, घोर तवस्सी, घोरबंभचेरवासी। —भगवती १।१

५ तद्धैतद् घोरं आंगिरस; कृष्णाय देवकीपुत्रायोक्त्वोवाचाऽपिपास एव स बभूव, सोऽन्तवेलाया-मेतत्त्रयं प्रतिपद्येताक्षतमस्यच्युतमसि प्राणसं शितमसीति।—छान्दोग्योपनिषद् प्र० ३, खण्ड १८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीकृष्ण इस उपदेश को श्रवण कर अपिपास हो गये, उन्हें अब किसी भी प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता नहीं रही। वे अपने आपको धन्य अनुभव करने लगे।

प्रस्तुत कथन की तुलना हम जैन आगमों में आये हुए भगवान अरिष्टनेमि के भविष्य कथन से कर सकते हैं। द्वारिका का विनाश और श्रीकृष्ण की जरत्कुमार के हाथ से मृत्यु होगी, यह सुनकर श्रीकृष्ण चिन्तित होते हैं। तब उन्हें भगवान उपदेश सुनाते हैं। जिसे सुनकर श्रीकृष्ण सन्तुष्ट एवं खेदरहित होते हैं।[१]

ऋग्वेद[२], यजुर्वेद[३] और सामवेद[४] में भगवान अरिष्टनेमि को तार्क्ष्य अरिष्टनेमि भी लिखा है—

स्वस्ति न इन्दो वृद्ध श्रवाः स्वति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्ति नो वृहस्पतिदधातु॥[५]

विज्ञों की धारणा है कि अरिष्टनेमि शब्द का प्रयोग जो वेदों में हुआ है वह भगवान अरिष्टनेमि के लिए है।[६]

महाभारत में भी 'तार्क्ष्य' शब्द का प्रयोग हुआ है। जो भगवान् अरिष्टनेमि का ही अपर नाम होना चाहिए।[७] उन्होंने राजा सगर को जो मोक्षमार्ग का उपदेश दिया है वह जैनधर्म के मोक्षमन्तव्यों से अत्यधिक मिलता-जुलता है। उसे पढ़ते समय सहज ही ज्ञात होता है कि हम मोक्ष सम्बन्धी जैनागमिक वर्णन पढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा—

सगर! मोक्ष का सुख ही वस्तुतः समीचीन सुख है। जो अहर्निश धन-धान्य आदि के उपार्जन में व्यस्त है, पुत्र और पशुओं में ही अनुरक्त है वह मूर्ख है, उसे यथार्थ ज्ञान नहीं होता। जिसकी बुद्धि विषयों में आसक्त है, जिसका मन अशान्त है, ऐसे मानव का उपचार कठिन है, क्योंकि जो राग के बंधन में बंधा हुआ है वह मूढ़ है तथा मोक्ष पाने के लिए अयोग्य है।[८]

ऐतिहासिक दृष्टि से यह स्पष्ट है कि सगर के समय में वैदिक लोग मोक्ष में विश्वास नहीं करते थे। अतः यह उपदेश किसी वैदिक ऋषि का नहीं हो सकता। उसका सम्बन्ध श्रमण संस्कृति से है।

यजुर्वेद में अरिष्टनेमि का उल्लेख एक स्थान पर इस प्रकार आया है—अध्यात्मयज्ञ को

---

१ अन्तकृद्दशा, वर्ग ५, अ० १

२ (क) त्वमू षु वाजिन देवजूतं सहावानं तरुतारं रथानाम्।
अरिष्टनेमि पृतनाजमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम॥ —ऋग्वेद १०।१२।१७८।१
(ख) ऋग्वेद १।१।१६

३ यजुर्वेद २५।१९

४ सामवेद ३।९

५ ऋग्वेद १।१।१६

६ उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन, पृ० ७

७ एवमुक्तस्तदा तार्क्ष्यः सर्वशास्त्र विदांवरः।
बिबुध्य संपदं चाग्र्यां सद्वाक्यमिदमब्रवीत॥
—महाभारत शान्तिपर्व २८८।४

८ महाभारत, शान्तिपर्व २८८।५, ६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रगट करने वाले, संसार के भव्य जीवों को सब प्रकार से यथार्थ उपदेश देने वाले और जिनके उपदेश से जीवों की आत्मा बलवान् होती है उन सर्वज्ञ नेमिनाथ के लिए आहुति समर्पित करता हूँ।[१]

डॉक्टर राधाकृष्णन ने लिखा है—यजुर्वेद में ऋषभदेव, अजितनाथ और अरिष्टनेमि इन तीन तीर्थंकरों का उल्लेख पाया जाता है।[२]

स्कंदपुराण के प्रभासखण्ड में वर्णन है—अपने जन्म के पिछले भाग में वामन ने तप किया—उस तप के प्रभाव से शिव ने वामन को दर्शन दिये। वे शिव श्यामवर्ण, अचेल तथा पद्मासन से स्थित थे। वामन ने उनका नाम नेमिनाथ रखा। यह नेमिनाथ इस घोर कलिकाल में सब पापों का नाश करने वाले हैं। उनके दर्शन और स्पर्श से करोड़ों यज्ञों का फल प्राप्त होता है।[३]

प्रभासपुराण में भी अरिष्टनेमि की स्तुति की गई है।[४]

महाभारत के अनुशासन पर्व, अध्याय १४६ में विष्णुसहस्रनाम में दो स्थानों पर 'शूरः शौरिर्जनेश्वरः' पद व्यवहृत हुआ है। जैसे—

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षण ॥५०॥
कालनेमि महावीरः शौरिः शूरजनेश्वरः।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहाहरिः ॥८२॥

---

१ वाजस्य नु प्रसव आवभूवेमा च विश्वा भुवनानि सर्वतः।
स नेमिराजा परियाति विद्वान् प्रजा पुष्टिं वर्द्धमानोऽस्मै स्वाहा॥

—वाजसनेयि—माध्यंदिन शुक्लयजुर्वेद, अध्याय ६, मंत्र २५
सातवलेकर संस्करण (विक्रम संवत् १९८४)

२ The Yajurveda mentions the names of three Tirthankaras—Rishabha, Ajitnath, and Arishthanemi.

—Indian Philosophy, Vol. 1, p. 287.

३ भवस्य पश्चिमे भागे वामनेन तपः कृतम्।
तेनैवतपसाकृष्टः शिवः प्रत्यक्षतां गतः॥
पद्मासनः समासीनः श्याममूर्ति दिगम्बरः।
नेमिनाथः शिवोऽथैवं नाम चक्रेऽस्य वामन॥
कलिकाले महाघोरे सर्वपापप्रणाशकः।
दर्शनात् स्पर्शनादेव कोटियज्ञफलप्रद॥

—स्कंदपुराण, प्रभास खण्ड

४ कैलाशे विमले रम्ये वृषभोऽयं जिनेश्वरः।
चकार स्वावतारं च सर्वज्ञः सर्वगः शिवः॥
रेवताद्रौ जिनो नेमिर्युगादिर्विमलाचले।
ऋषीणां याश्रमादेव मुक्तिमार्गस्य कारणम्॥

—प्रभासपुराण ४६-५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन श्लोकों में 'शूरः शौरिर्जनेश्वरः' शब्दों के स्थान में 'शूरः शौरिर्जिनेश्वरः' पाठ मानकर अरिष्टनेमि अर्थ किया गया है।[1]

स्मरण रखना चाहिए कि यहाँ पर श्रीकृष्ण के लिए 'शौरि' शब्द का प्रयोग हुआ है। वर्तमान में आगरा जिले के बटेश्वर के सन्निकट शौरिपुर नामक स्थान है। वही प्राचीन युग में यादवों की राजधानी थी। जरासंघ के भय से यादव वहाँ से भागकर द्वारिका में जा बसे। शौरिपुर में ही भगवान् अरिष्टनेमि का जन्म हुआ था, एतदर्थ उन्हें 'शौरि' भी कहा गया है। वे जिनेश्वर तो थे ही अतः यहाँ 'शूरः शौरिर्जिनेश्वरः' पाठ अधिक तर्कसंगत लगता है। क्योंकि वैदिक परम्परा के ग्रन्थों में कहीं पर भी शौरिपुर के साथ यादवों का सम्बन्ध नहीं बताया, अतः महाभारत में श्रीकृष्ण को 'शौरि' लिखना विचारणीय अवश्य है।

भगवान अरिष्टनेमि का नाम अहिंसा की अखण्ड ज्योति जगाने के कारण इतना अत्यधिक लोकप्रिय हुआ कि महात्मा बुद्ध के नामों की सूची में एक नाम अरिष्टनेमि का भी है। लंकावतार के तृतीय परिवर्तन में बुद्ध के अनेक नाम दिये हैं। वहाँ लिखा है--जिस प्रकार एक ही वस्तु के अनेक नाम प्रयुक्त होते हैं उसी प्रकार बुद्ध के असंख्य नाम हैं। कोई उन्हें तथागत कहते हैं तो कोई उन्हें स्वयंभू, नायक, विनायक, परिणायक, बुद्ध, ऋषि, वृषभ, ब्राह्मण, विष्णु, ईश्वर, प्रधान, कपिल, भूतानत, भास्कर, अरिष्टनेमि, राम, व्यास, शुक, इन्द्र, बलि, वरुण आदि नामों से पुकारते हैं।[2]

—इतिहासकारों की दृष्टि में

नन्दीसूत्र में ऋषि-भाषित (इसिभासियं) का उल्लेख है।[3] उसमें पैंतालीस प्रत्येक बुद्धों के द्वारा निरूपित पैंतालीस अध्ययन हैं। उनमें बीस प्रत्येकबुद्ध भगवान अरिष्टनेमि के समय में हुए।[4] उनके नाम इस प्रकार हैं—

(१) नारद	(११) मंखलिपुत्र
(२) वज्जियपुत्र	(१२) याज्ञवल्क्य
(३) असित दविक	(१३) मैत्रय भयाली
(४) भारद्वाज अंगिरस	(१४) बाहुक
(५) पुष्पसालपुत्र	(१५) मधुरायण
(६) वल्कलचीरि	(१६) सोरियायण
(७) कुर्मापुत्र	(१७) विदु
(८) केवलीपुत्र	(१८) वर्षपकृष्ण
(९) महाकश्यप	(१९) आरियायण
(१०) तेतलिपुत्र	(२०) उत्कलवादी

उनके द्वारा प्ररूपित अध्ययन अरिष्टनेमि के अस्तित्व के स्वयंभूत प्रमाण हैं।

प्रसिद्ध इतिहासकार डाक्टर राय चौधरी ने अपने वैष्णवधर्म के प्राचीन इतिहास में भगवान अरिष्टनेमि (नेमिनाथ) को श्रीकृष्ण का चचेरा भाई लिखा है।

---

१ मोक्षमार्ग प्रकाश—पं० टोडरमल

२ बौद्धधर्म दर्शन, पृ० १६२

३ नन्दीसूत्र

४ णारद-वज्जिय-पुत्ते आसिते अंगरिसि-पुप्फसाले य।
वक्कलकुम्मा केवलि कासब तह तेतलिसुते य॥
मंखलि जण्ण भयालि बाहुय महु सोरियाणा विदू विपू।
वरिसकण्हे आरिय उक्कल-वादी य तरुणे य॥ इसिभासियाइं पढम संगहणी, गा० २-३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पी० सी० दीवान ने लिखा है 'जैन ग्रन्थों के अनुसार नेमिनाम और पार्श्वनाथ के बीच में ८४००० वर्ष का अन्तर है। हिन्दू पुराणों में इस बात का निर्देश नहीं है कि वसुदेव के समुद्रविजय बड़े भाई थे और उनके अरिष्टनेमि नामक कोई पुत्र था।' प्रथम कारण के सम्बन्ध में दीवान का कहना है कि हमें यह स्वीकार करना होगा कि हमारे वर्तमान ज्ञान के लिए यह सम्भव नहीं है कि जैन ग्रन्थकारों के द्वारा एक तीर्थंकर से दूसरे तीर्थंकर के बीच में सुदीर्घकाल का अन्तराल कहने में उनका क्या अभिप्राय है, इसका विश्लेषण कर सकें; किन्तु केवल इसी कारण से जैनग्रन्थों में वर्णित अरिष्टनेमि के जीवनवृत्तान्त को, जो अतिप्राचीन प्राकृत ग्रन्थों के आधार पर लिखा गया है, दृष्टि से ओझल कर देना युक्तियुक्त नहीं है।

दूसरे कारण का स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है कि भागवत सम्प्रदाय के ग्रन्थकारों ने अपने परम्परागत ज्ञान का उतना ही उपयोग किया है जितना श्रीकृष्ण को परमात्मा सिद्ध करने के लिए आवश्यक था। जैनग्रन्थों में ऐसे अनेक ऐतिहासिक तथ्य हैं जो भागवत साहित्य में उपलब्ध नहीं हैं।[१]

कर्नल टॉड ने अरिष्टनेमि के सम्बन्ध में लिखा है 'मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में चार बुद्ध या मेधावी महापुरुष हुए हैं। उनमें पहले आदिनाथ और दूसरे नेमिनाथ थे। नेमिनाथ ही स्केन्डीनेविया निवासियों के प्रथम ओडिन तथा चीनियों के प्रथम 'फो' देवता थे।'[२]

प्रसिद्ध कोषकार डाक्टर नगेन्द्रनाथ वसु, पुरातत्त्ववेत्ता डाक्टर फुहर्र, प्रोफेसर बारनेट, मिस्टर करवा, डाक्टर हरिदत्त, डाक्टर प्राणनाथ विद्यालंकार प्रभृति अन्य अनेक विद्वानों का स्पष्ट मन्तव्य है कि भगवान् अरिष्टनेमि एक प्रभावशाली पुरुष हुए थे, उन्हें ऐतिहासिक पुरुष मानने में कोई बाधा नहीं है।

साम्प्रदायिक अभिनिवेश के कारण वैदिक ग्रन्थों में स्पष्ट नाम का निर्देश होने पर भी टीकाकारों ने अर्थ में परिवर्तन किया है, अतः आज आवश्यकता है तटस्थ दृष्टि से उस पर चिन्तन करने की। जब हम तटस्थ दृष्टि से चिन्तन करेंगे तो सूर्य के उजाले की भाँति स्पष्ट ज्ञात होगा कि भगवान अरिष्टनेमि एक ऐतिहासिक पुरुष थे। □

---

१ जैन साहित्य का इतिहास—पूर्व पीठिका—ले० पं० कैलाशचन्द्रजी, पृ० १७०-१७१

२ अन्नल्स आफ दी भण्डारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट-पत्रिका, जिल्द २३, पृ० १२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org